

## मौद्रिक नीति की दृष्टिकोण समीक्षा : रज़िर्व बैंक ने चार साल में पहली बार की रेपो दर में वृद्धि

### संदर्भ

रज़िर्व बैंक ने महँगाई बढ़ने की चिंता के चलते मुख्य नीतितर दर रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की वृद्धि कर इसे 6.25 प्रतिशत कर दिया जिससे बैंक कर्ज़ महँगा हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में पछिले कुछ महीनों के दौरान कच्चे तेल के दाम बढ़ने से महँगाई को लेकर चिंता बढ़ी है। रज़िर्व बैंक ने पछिले चार साल में पहली बार रेपो दर में वृद्धि की है।

### प्रमुख बिंदु

- मौद्रिक नीति समिति के अनुसार, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित खुदरा मुद्रास्फीति अप्रैल में तेज़ी से बढ़कर 4.6 प्रतिशत पर पहुंच गई। इस दौरान खाद्य तथा ईंधन को छोड़कर अन्य समूहों में तीव्र वृद्धि का इसमें अधिक योगदान रहा।
- नीतितर दर रेपो में 0.25 प्रतिशत की वृद्धि कर इसे 6.25 प्रतिशत कर दिया गया है जिससे बैंक कर्ज़ महँगा हो सकता है।
- रिवर्स रेपो दर 6 प्रतिशत तथा बैंक दर 6.50 प्रतिशत है।
- जनवरी 2014 के बाद पहली बार रेपो दर में वृद्धि की गई है।
- समीक्षा में चालू वित्त वर्ष के लिये आर्थिक विकास दर का अनुमान 7.4 प्रतिशत पर पूर्ववत् बनाए रखा गया है।
- चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही के लिये खुदरा मुद्रास्फीति अनुमान को बढ़ाकर 4.8-4.9 प्रतिशत कर दिया गया है, जबकि वर्ष की दूसरी छमाही के लिये इसे 4.7 प्रतिशत रखा गया है।
- रज़िर्व बैंक के मुद्रास्फीति के इस अनुमान में केंद्र सरकार के कर्मचारियों को मलिनने वाले बढ़े महँगाई भत्ते का असर भी शामिल है।
- पछिले दो माह में कच्चे तेल की कीमतों में 12 प्रतिशत की तेज़ी आई है।
- भू-राजनीतिक जोखिम, वित्तीय बाज़ार में उतार-चढ़ाव, व्यापार संरक्षणवाद का घरेलू वृद्धि पर प्रभाव पड़ेगा।

### मौद्रिक नीति समिति

मौद्रिक नीति समिति (Monetary Policy Committee-MPC) भारत सरकार द्वारा गठित एक समिति है जिसका गठन ब्याज दर निर्धारण को अधिक उपयोगी एवं पारदर्शी बनाने के लिये 27 जून, 2016 को किया गया था। भारतीय रज़िर्व बैंक अधिनियम में संशोधन करते हुए भारत में नीति निर्माण को नवगठित मौद्रिक नीति समिति (MPC) को सौंप दिया गया है।

- वित्त अधिनियम 2016 के द्वारा रज़िर्व बैंक ऑफ इंडिया अधिनियम 1934 (आरबीआई अधिनियम) में संशोधन किया गया, ताकि मौद्रिक नीति समिति को वैधानिक और संस्थागत रूप प्रदान किया जा सके।
- आरबीआई एक्ट के प्रावधानों के अनुसार, मौद्रिक नीति समिति के छह सदस्यों में से तीन सदस्य आरबीआई से होते हैं और अन्य तीन सदस्यों की नियुक्ति केंद्रीय बैंक करता है।
- रज़िर्व बैंक के गवर्नर इस समिति के पदेन अध्यक्ष हैं, जबकि भारतीय रज़िर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर मौद्रिक नीति समिति के प्रभारी के तौर पर काम करते हैं।

### उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

- उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (consumer price index या CPI) घरेलू उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी गई वस्तुओं एवं सेवाओं (goods and services) के औसत मूल्य को मापने वाला एक सूचकांक है।
- उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की गणना वस्तुओं एवं सेवाओं के एक मानक समूह के औसत मूल्य की गणना करके की जाती है।
- वस्तुओं एवं सेवाओं का यह मानक समूह एक औसत शहरी उपभोक्ता द्वारा खरीदे जाने वाली वस्तुओं का समूह होता है।

### रेपो दर

जैसा कि हम जानते हैं बैंकों को अपने काम-काज के लिये अक्सर बड़ी रकम की ज़रूरत होती है। बैंक इसके लिये आरबीआई से अल्पकाल के लिये कर्ज़ मांगते हैं और इस कर्ज़ पर रज़िर्व बैंक को उन्हें जिस दर से ब्याज देना पड़ता है, उसे ही रेपो दर कहते हैं। रेपो दर अधिक होने से मतलब है कि बैंक से मलिनने वाले कई तरह के कर्ज़ महँगे हो जाएँगे। जैसे कि होम लोन, वाहन लोन इत्यादि।

## रविर्स रेपो दर

यह रेपो दर के वपिरीत होती है। यह वह दर होती है जिस पर बैंकों को उनकी ओर से आरबीआई में जमा धन पर ब्याज मलितल है। रविर्स रेपो दर बाजारों में नकदी की तरलता को नयित्तरति करने में काम आती है।

## मुद्रलसफीतल

- जब मलंग और आपूर्तल में असंतुलन पैदल होता है तो वसतुओं और सेवलओं की कीमतें बढ जाती हैं। कीमतों में इस वृद्धल को मुद्रलसफीतल कहते हैं।
- अत्यधकल मुद्रलसफीतल अरथव्यवसुथल के लयल हलनकीरक होती है, जबकल 2 से 3% की मुद्रलसफीतल की दर अरथव्यवसुथल के लयल ठीक होती है।
- मुद्रलसफीतल मुख्यतः दो करणों से होती है- मलंग करक और मूल्य वृद्धल करक से।
- मुद्रलसफीतल के करण अरथव्यवसुथल के कुछ कषेत्तूरों में मंदी आ जाती है।
- मुद्रलसफीतल कल मलपन तीन प्रकर से कयल जलतल है- थोक मूल्य सूचकलंक, उपभोक्तल मूल्य सूचकलंक एवं रलषट्ठीय आय वचलन वधलसे।

## रेपो दर और मुद्रलसफीतल में संबंढ

- रेपो दर कम होने से बैंकों के लयल रजलरव बैंक से करज लेनल ससुतल हो जलतल है और तभी बैंक ब्यलज दरों में भी कटौती करते हैं तलक जल्यलदल से जल्यलदल रकम करज के तौर पर दी जल सके। रेपो दर में वृद्धल होने पर सभी प्रकर के करज महंगे हो जलते हैं।
- मुद्रलसफीतल बढने कल एक मतलब यह भी है कल वसतुओं एवं सेवलओं की कीमतों में वृद्धल के करण, बढी हुई कर्य शक्तल के बलवजूद लोग पहले की तुलनल में वर्तमलन में कम वसतु एवं सेवलओं कल उपभोग कर पल रहे हैं। ऐसी सुथतल में आरबीआई कल कर्य यह है कल वलह बढती हुई मुद्रलसफीतल पर नयित्तरण रखने के लयल बलजलर से पैसे को अपनी तरफ खीच ले। अतः आरबीआई रेपो दर में बढोतरी कर देतल है तलक बैंकों के लयल करज लेनल महंगल हो जलए और वे अपने बैंक दरों को बढल दें तथल लोग करज न ले सकें।

## नषिकरष

जीडीपी में शलनदलर वृद्धल, खुदरल महंगलई दर कल नचले सुतर पर होनल, मजबूत GST संग्रह और सकरलतमक नवलशक वचलरों के सलथ मौदरकल नीतल इस बलत की पुषटल करती है कल आरुथकल गतवलधलतल में उछलल आ रहल है।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rbi-tweaks-norms-to-boost-affordable-housing-lending>

